

# मिड-डे-मिल योजना का सूक्ष्म मूल्यांकन एवं सुझाव (तहसील वाराणसी जिला वाराणसी के विशेष सन्दर्भ में)

## Micro Evaluation of Mid-Day-Meal Scheme and suggestion (with special reference to Tehsil Varanasi District Varanasi)

Paper Submission: 10/09/2021, Date of Acceptance: 23/09/2021, Date of Publication: 24/09/2021

सारांश

भारत सरकार द्वारा पूरे देश में चलाई जा रही मिड-डे-मिल योजना प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास एवं प्रगति के मार्ग को सुदृढ़ बनाने के लिए सरकारी स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मिड-डे-मिल योजना का शिक्षा के क्षेत्र में विकास एवं प्रगति के साथ-साथ बालक एवं बालिकाओं में पोषाहार एवं भूख की समस्या गरीबी उन्मूलन एवं पोषण के लिए एक अच्छी व्यवस्था है।

प्रस्तुत किए जा रहे शोधपत्र में प्राथमिक सर्वेक्षण पद्धति के आधार पर विद्यार्थियों तथा उनके विद्यालयों से प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग करके इस योजना को क्रियान्वित करके उसमें शिक्षा के प्रभाव बौद्धिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, आदि का विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। और यह देखा जा रहा है कि मिड-डे-मिल योजना शिक्षा के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। परन्तु कुछ कमियां भी हैं जिनको समाप्त करने के लिए विद्यार्थियों के योगदान की आवश्यकता महसूस की गयी है। विश्लेषण, अधिगम स्तर, अधिगम व्यवहार।

The Mid-Day-Meal Scheme being run by the Government of India across the country is playing an important role at the government level for improving the path of educational development and progress of the primary and upper primary level students. Along with the development and progress in the field of education, the problem of nutrition and hunger in boys and girls is a good arrangement for poverty alleviation and nutrition. In the present paper, on the basis of the primary survey method, using the data received from the students and their schools, the effect of education, intellectual health, mental health, etc. has been analyzed from the point of view of the students. And it is seen that the Mid-Day-Meal Scheme is playing an important role in the promotion of education. But there are some shortcomings as well, to eliminate the need for the contribution of the students has been felt.

**मुख्य शब्द:** विद्यार्थी, स्वास्थ्य, भूख, कुपोषण, पोषाहार, क्रियान्वयन, उपस्थिति, गुणवत्ता, मूल्यांकन, विश्लेषण, अधिगम स्तर, अधिगम व्यवहार।

**Keywords:** Student, Health, Hunger, Malnutrition, Nutrition, Implementation, Attendance, Quality, Evaluation, Analysis, Learning Level, Learning Behaviour.

### प्रस्तावना

भारत में मिड-डे-मिल योजना सर्वप्रथम आजादी से पहले मद्रास नगर निगम द्वारा 1925 में शुरू की गयी थी। 1980 के दशक में यह गुजरात, केरल, तमिलनाडू और पाण्डुचेरी में भी प्रारम्भ कर दी गयी। 1990-91 में यह योजना 12 और राज्यों में प्रारम्भ की गयी। (इन्द्रदेव सिंह, 2003) 15 अगस्त 1995 से मध्याह्न भोजन योजना को राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत कुल 2,408 विकासखण्डों में निःशुल्क खाद्यान्न की व्यवस्था की गयी। (रमेश चन्द्र कवर, 1995) इसके अन्तर्गत सरकार द्वारा कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों के लिये 80 प्रतिशत उपस्थिति पर प्रतिमाह तीन किलोग्राम गेहूं अथवा चावल विद्यार्थियों को दिया जाता था परन्तु यह देखा गया कि सरकार द्वारा जो खाद्यान्न विद्यार्थियों को उपलब्ध कराया जाता था वह उनको न मिलकर उसका परिवार ले लेता था विद्यार्थियों को पौष्टिक तत्वों कमी बनी रहती थी और वे शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर रहते थे जिससे यह योजना अपने मूल उद्देश्य से भटक गयी थी इसी कमी को सुधारने के लिए 1997-98 में सभी विकासखण्डों में तैयार मिड-डे-मिल योजना को लागू किया गया। (पी0सी0 सिकलीगर, 2011)

01 सितम्बर 2004 से सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार 3,479 पिछड़े विकासखण्डों में 8वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए पका पकाया भोजन सरकारी विद्यालयों में उपलब्ध कराया जा रहा है। (एन0के0 मण्डल, 2012) वर्तमान समय में इस योजना से प्रदेश के 1,13,249 प्राथमिक विद्यालयों एवं

### शैला परवीन

एसोसिएट प्रोफेसर,  
सोशल वर्क विभाग,  
महात्मा गांधी काशी  
विद्यापीठ, वाराणसी,  
उत्तर प्रदेश, भारत

### शिव पूजन प्रेमी

पोस्ट डॉक्टरेट फेलो,  
(पीडीएफ) सामाजिक  
कार्य विभाग,  
महात्मा गांधी काशी  
विद्यापीठ, वाराणसी,  
उत्तर प्रदेश, भारत

45649 उच्च प्राथमिक विद्यालयों के क्रमशः 123.15 लाख तथा 57.05 लाख विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।

भारत में मिड-डे-मिल योजना सर्वप्रथम आजादी से पहले मद्रास नगर निगम द्वारा 1925 में शुरू की गयी थी। 1980 के दशक में यह गुजरात, केरल, तमिलनाडु और पाण्डुचेरी में भी प्रारम्भ कर दी गयी। 1990-91 में यह योजना 12 और राज्यों में प्रारम्भ की गयी। (इन्द्रदेव सिंह, 2003) 15 अगस्त 1995 से मध्याह्न भोजन योजना को राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत कुल 2,408 विकासखण्डों में निःशुल्क खाद्यान्न की व्यवस्था की गयी। (रमेश चन्द्र कवर, 1995) इसके अन्तर्गत सरकार द्वारा कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों के लिये 80 प्रतिशत उपस्थिति पर प्रतिमाह तीन किलोग्राम गेहूं अथवा चावल विद्यार्थियों को दिया जाता था परन्तु यह देखा गया कि सरकार द्वारा जो खाद्यान्न विद्यार्थियों को उपलब्ध कराया जाता था वह उनको न मिलकर उसका परिवार ले लेता था विद्यार्थियों को पौष्टिक तत्वों कमी बनी रहती थी और वे शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर रहते थे जिससे यह योजना अपने मूल उद्देश्य से भटक गयी थी इसी कमी को सुधारने के लिए 1997-98 में सभी विकासखण्डों में तैयार मिड-डे-मिल योजना को लागू किया गया। (पी0सी0 सिकलीगर, 2011)

01 सितम्बर 2004 से सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार 3,479 पिछड़े विकासखण्डों में 8वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए पका पकाया भोजन सरकारी विद्यालयों में उपलब्ध कराया जा रहा है। (एन0के0 मण्डल, 2012) वर्तमान समय में इस योजना से प्रदेश के 1,13,249 प्राथमिक विद्यालयों एवं 45649 उच्च प्राथमिक विद्यालयों के क्रमशः 123.15 लाख तथा 57.05 लाख विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।

भारत में मिड-डे-मिल योजना की आवश्यकता प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक दोनों के लिए है। शिक्षा की समस्याओं के रूप में 14 वर्ष तक के सभी विद्यार्थियों का विद्यालय में प्रवेश नहीं लेना अथवा हो पाना, सभी विद्यार्थियों की विद्यालय में शत प्रतिशत उपस्थिति नहीं होना तथा विद्यालय में नहीं बने रहना एवं विद्यालय जाने वाले विद्यार्थियों में अपेक्षित अधिगम स्तरों का विकास न हो पाना आदि समस्याएं प्रमुख स्थान पर हैं। विद्यालय में मध्याह्न भोजन योजना के शुरू होने से विद्यालय में आने वाले विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई है, विद्यालय में विद्यार्थियों के रूकने की प्रवृत्ति विकसित हुई है तथा ड्रापआउट की दर में कमी आई है। विभिन्न जाति धर्म के विद्यार्थियों के एक जगह पर एक साथ बैठकर खाना खाने से बन्धुत्व एवं समानता की भावना विकसित हुई है। अधिकतम पौष्टिक आहार मिलने से अब बच्चों को स्कूल में भूखे नहीं रहना पड़ता है और न ही अब वे विद्यालय जाने से डरते हैं और अब वे विद्यालय जाना चाहते हैं।

### साहित्य सर्वेक्षण

देवधर, महेद्रता, रमणी, मावलाकर, घोष एवं ब्रगेन्जा (2019) ने मध्याह्न भोजन योजना की कई स्तरों पर जांच की है, जैसे कि प्रयोगशाला परीक्षण, साक्षरता दर, गरीबी निवारण दर पौष्टिकता परीक्षण, परिणामतः यह निष्कर्ष निकाला गया कि कुछ सुधारों जैसे कि सार्वजनिक निजी साझेदारी आवर्ती निरीक्षण आदि के द्वारा मध्याह्न भोजन योजना की कमियों को दूर करते हुए चालू रखना चाहिए।

पॉल एवं मण्डल (2018) का यह शोधपत्र पश्चिम बंगाल के बर्धवान जिले के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शिक्षण पर मध्याह्न भोजन योजना के प्रभाव का अध्ययन करता है। काई वर्ग परीक्षण, बहुगुणी प्रतीक गमन के परिणाम तथा टी-परीक्षण इत्यादि से यह प्रदर्शित हुआ कि मिड-डे-मिल योजना उपस्थिति बढ़ाने, नामांकन बढ़ाने, विद्यार्थियों का स्कूल छोड़ना, भूखमरी मिटाने सामाजिक और लैंगिक समानता बढ़ाने इत्यादि पर धनात्मक प्रभाव डाला है। सन्तुष्टिपूर्ण परिणाम प्राप्त करने के लिए मध्याह्न भोजन योजना को स्वास्थ्य जागरूकता अभियानों से जोड़ने की आवश्यकता महसूस की गयी। भारत के 2004 के सामाजिक आर्थिक निरीक्षण के आंकड़ों पर मध्याह्न भोजन के प्रभाव का अध्ययन किया तथा पाया कि मध्याह्न भोजन योजना निम्न आय वाले परिवारों के बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा पहुंचाने में मदद कर रही है।

उमा भारती (2019) द्वारा किए गये सर्वेक्षण के अनुसार मध्याह्न भोजन योजना का उद्देश्य मात्र सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों का नामांकन, उपस्थिति तथा स्वास्थ्य बढ़ाना है जबकि गुणवत्तापरक शिक्षा बिल्कुल गायब है।

लाथ राहुल (2018) ने इस शोधपत्र में मध्याह्न भोजन को विद्यालयों में बच्चों के नामांकन एवं उपस्थिति बढ़ाने का जरिया मानते हुए बताया है कि बच्चों को पोषण युक्त आहार प्रदान करने के लिए इसे सही एवं उचित स्थानों पर लागू किया जाये, इसके साथ वह विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम को भी आवर्ती जांच एवं नई तकनीकी से सम्बद्ध करने को कहता है।

भार्गव माधवी, काण्डपाल एस0डी0, अग्रवाल प्रदीप, सेठी एच0 (2019) ने पाया कि मध्याह्न भोजन योजना से सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को पोषण मिल रहा है परन्तु बड़े विद्यार्थी इस योजना को नजर अंदाज कर रहे हैं।

**मिड-डे-मिल व्यवस्था के अन्तर्गत साप्ताहिक मेन्यु**

दिन	मेन्यु
सोमवार	रोटी, सोयाबीन/दाल की बड़ी का प्रयोग एवं ताजा मौसमी फल
मंगलवार	चावल – दाल
बुद्धवार	तहरी एवं दूध (प्रा० विद्यालय के लिए 150 मिमी० उच्च प्रा० विद्यालय के लिए 200 मिमी०)
बृहस्पतिवार	रोटी, दाल
शुक्रवार	तहरी जिसमें सोयाबीन की बड़ी का प्रयोग
शनिवार	चावल, सोयाबीन युक्त सब्जी

स्रोत - उच्च प्राथमिक विद्यालय पर्वतपुर ब्लाक चिरईगाँव तहसील एवं जिला-वाराणसी।

**आंकड़ों का विश्लेषण**

मध्याह्न भोजन योजना का विश्लेषण विद्यार्थियों के दृष्टि से करने के लिए शोधकर्ता ने 200 विद्यार्थियों का न्यादर्श लिया और उनके घर पर जाकर बात की। 200 विद्यार्थियों के न्यादर्श में 110 लड़के एवं 90 लड़कियों का चयन किया गया। जिसमें से 90 विद्यार्थी अनुसूचित जाति के, 60 विद्यार्थी पिछड़ी जाति के एवं 50 विद्यार्थी सामान्य वर्ग के हैं।

**तालिका संख्या- 1.1****विद्यार्थियों के माता-पिता की आय का विवरण**

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	9000-12000 के बीच	100	50
2.	13,000-15,000 के बीच	70	35
3.	16,000 से ऊपर	30	15
	योग	200	100

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि न्यादर्श में लिये गये सर्वाधिक 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के माता-पिता की आय 9000-12000 के बीच है। 35 प्रतिशत उत्तरदाताओं के माता-पिता की आय 35 प्रतिशत जबकि 16000 से ऊपर आय वाले माता-पिता 15 प्रतिशत है।

अतः स्पष्ट है कि प्राथमिक विद्यालयों में सर्वाधिक कमजोर आर्थिक स्थिति वाले माता-पिता के बच्चे ही पढ़ते हैं, जिनकी आय अधिक होती है, उनके माता-पिता प्राइवेट विद्यालयों में भेजते हैं।

**तालिका संख्या- 1.2****धर्म के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण**

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हिन्दू	150	75
2.	मुस्लिम	50	25
3.	सिक्ख	—	—
4.	ईसाई	—	—
	योग	200	100

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि न्यादर्श में लिये गये सर्वाधिक 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के माता-पिता की आय 9000-12000 के बीच है। 35 प्रतिशत उत्तरदाताओं के माता-पिता की आय 35 प्रतिशत जबकि 16000 से ऊपर आय वाले माता-पिता 15 प्रतिशत है।

अतः स्पष्ट है कि प्राथमिक विद्यालयों में सर्वाधिक कमजोर आर्थिक स्थिति वाले माता-पिता के बच्चे ही पढ़ते हैं, जिनकी आय अधिक होती है, उनके माता-पिता प्राइवेट विद्यालयों में भेजते हैं।

**तालिका संख्या- 1.3**  
**जाति के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण**

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	सामान्य	50	25
2.	पिछड़ी जाति	60	30
3.	अनुसूचित जाति / जनजाति	90	45
	योग	200	100

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि न्यादर्श में लिये गये सर्वाधिक 45 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचित जाति/जनजाति से सम्बन्धित है, 30 प्रतिशत उत्तरदाता पिछड़ी जाति से सम्बन्धित है जबकि 25 प्रतिशत उत्तरदाता सामान्य वर्ग से सम्बन्धित है।

अतः स्पष्ट है प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अधिकतर अध्ययन करने वाले छात्रों की संख्या अनुसूचित जाति/जनजाति के होते हैं। यहीं बात पीसी सिकरौल के शोध पत्र "मीड-डे-मील एण्ड स्कूल एजुकेशन प्लानिंग इम्प्लिमेंटेशन एण्ड इफेक्टिवनेस, (2011) में यही बात कही गयी है।

**तालिका संख्या- 1.4**  
**स्वच्छता के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण**

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	142	71
2.	नहीं	58	29
	योग	200	100

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि न्यादर्श में लिये गये सर्वाधिक 71 प्रतिशत उत्तरदाता का कहना है कि खाना खाने से पहले हाथ धुलवाए जाते हैं जबकि 29 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि खाना खाने से पहले हाथ नहीं धुलवाए जाते हैं।

अतः स्पष्ट है कि मध्याह्न भोजन के समय हाथ धुलवाए जाते हैं, जिससे यह कहा जा सकता है कि स्वच्छता की आदत बच्चों में विकसित हो रही है।

**तालिका संख्या- 1.5**  
**मिड-डे-मिल के बाद विद्यार्थियों के क्रिया कलाप का विवरण**

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पढ़ते हैं।	80	40
2.	घर चले जाते हैं।	120	60
	योग	200	100

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि न्यादर्श में लिये गये सर्वाधिक 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि मध्याह्न भोजनावकाश के बाद मैं घर चला जाता हूँ जबकि 40 प्रतिशत ने माना कि मैं पढ़ता हूँ। अतः स्पष्ट है कि मध्याह्न भोजनावकाश के बाद अधिकतर बच्चे अपने घर चले जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि शिक्षा की गुणवत्ता पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है। यही बात जाविर अली एवं अन्य (2015) के शोध पत्र "School Mid-day-meal menu in India" में भी सामने आई है।

**तालिका संख्या- 1.6**  
**मिड-डे-मिल के स्वादिष्ट होने का विवरण**

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अच्छा	160	80
2.	खराब	40	20
	योग	200	100

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि न्यादर्श में लिये गये सर्वाधिक 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि भोजन का स्वाद अच्छा नहीं होता है जबकि 20 प्रतिशत ने माना है कि स्वाद अच्छा नहीं होता है।

*Remarking An Analisation*

अतः स्पष्ट है कि मध्याह्न भोजन योजना के अन्तर्गत रसोइएँ द्वारा बनाए गये भोजन का स्वाद घर पर बनाये गये भोजन के स्वाद जैसा नहीं होता है। मध्याह्न भोजन योजना की एक कमी है, यहीं बात देवधर, डी0 घोष एवं अन्य के शोध पत्र "An Evaluation of Mid-Day-Meal Scheme" में भी कही गयी है।

तालिका संख्या— 1.7

## मिड-डे-मिल के साफ होने का विवरण

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	177	88.50
2.	नहीं	23	11.50
	योग	200	100

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि न्यादर्श में लिये गये सर्वाधिक 88.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि हमें मध्याह्न भोजन साफ मिलता है जबकि 11.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि हमें साफ भोजन नहीं मिलता है।

अतः स्पष्ट है कि मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता में कमी नहीं होती है, यही बात जाविरअली के शोधपत्र (2015) ष्ःबीववस डक्ड उमंस उमदन पद प्दकपंष् में भी कही गयी है। उन्होंने अपने शोध विश्लेषण में बताया कि मध्याह्न भोजन योजना में मिलने वाले भोजन की गुणवत्ता अच्छी होती है एवं साफ भोजन मिलता है।

तालिका संख्या— 1.8

## मिड-डे-मिल के लिए बर्तन का विवरण

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	150	90
2.	नहीं	20	10
	योग	200	100

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि न्यादर्श में लिये गये सर्वाधिक 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वे खाना खाने के लिए बर्तन घर से लेकर आते हैं जबकि 10 प्रतिशत ने बताया कि खाने खाने के लिए बर्तन विद्यालय में मिलता है।

अतः स्पष्ट है कि मिड-डे-मिल के लिए अधिकतर विद्यार्थी बर्तन घर से लेकर आते हैं। जबकि सरकार ने बर्तन की व्यवस्था कर रखा है लेकिन उनको बर्तन मिल नहीं रहा है। स्पष्ट है कि कहीं न कहीं भ्रष्टाचार का बोलवाला है।

#### 5.4 मिड-डे-मिल की गुणवत्ता

1. मिड-डे-मिल के वितरण के बाद 120 विद्यार्थी घर चले जाते हैं। जो इस योजना की एक कमी है।
2. मिड-डे-मिल के वितरण से पहले किसी भी प्रकार की समय सारणी के आधार पर पठन-पाठन नहीं होता है। यह बात 150 विद्यार्थियों ने स्वीकार किया है।
3. सर्वेक्षण का विश्लेषण करने से पता लगता है कि 160 विद्यार्थी ऐसे हैं जिन्हें विद्यालय का खाना खाने में अच्छा लगता है। 176 विद्यार्थियों का कहना है कि उन्हें भरपेट खाना मिलता है।
4. 177 विद्यार्थी कहते हैं कि उन्हें विद्यालय में हमेशा ही साफ खाना मिलता है। विद्यालय में जो भी खाना मिलता है उसे कोई भी घर पर नहीं लाता, वे सारा खाना विद्यालय में ही समाप्त करते हैं। इसका मतलब है कि विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण भोजन मिलता है।
5. खाना खाने के लिए विद्यार्थी बर्तन घर से लेकर आते हैं। केवल 20 बच्चे बिना बर्तन के घर से आते हैं।

#### अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र में शोधकर्ता ने मिड-डे-मिल योजना का सूक्ष्म मूल्यांकन एवं सुझाव, "मिड-डे-मिल व्यवस्था के क्रियान्वयन का विश्लेषण, सभी के लिए नामांकन, सबकी उपस्थिति, सभी के लिए अधिगम, उपलब्धियों पर इसके प्रभाव को जानना है।

मिड-डे-मिल योजना का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता ने सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग करते हुए 200 छात्र छात्राओं जिनमें से 50 छात्र मुस्लिम तथा 150 छात्र हिन्दू हैं, छात्रों के न्यादर्श में 116 लड़के तथा 84 लड़कियाँ हैं। 150 हिन्दू छात्राओं में से 90 अनुसूचित जाति/जनजाति के हैं, 40 पिछड़ा वर्ग और 20 छात्र सामान्य वर्ग से हैं।

**निष्कर्ष**

भारत सरकार द्वारा पूरे देश में चलाई जा रही मिड-डे-मिल योजना गरीब विद्यार्थियों की पढ़ाई के साथ-साथ उनकी स्वास्थ्य एवं पोषण सम्बन्धी आवश्यकता की पूर्ति करने में सतत क्रियाशील रही है लेकिन यह व्यवस्था के कार्यान्वयन में हो रही विभिन्न कमियों जैसे कि भोजन की गुणवत्ता अच्छी न होना, भोजन स्वादिष्ट न होना, बहुत ही सीमित चीजें मेन्यू में होना, भोजन खाने से विद्यार्थियों का बीमार हो जाना आदि की वजह से यह अपने सभी उद्देश्यों को पूर्णतः प्राप्त करने में असमर्थ रही है। मिड-डे-मिल व्यवस्था के कार्यान्वयन की सीमाएं इसकी विफलता की कहानी को सामने ला रही है। अब मिड-डे-मिल के प्रारूप एवं कार्यान्वयन व्यवस्था को प्रभावकारी बनाने की आवश्यकता है जिससे वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

**सुधार के लिए सुझाव**

1. विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को जो भोजन दिया जा रहा है उसकी गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए और यह सुनिश्चित किया जाय कि मेन्यू में समय-समय पर परिवर्तन होता रहे।
2. अध्ययन से यह बात सिद्ध होती है कि सरकार ने मिड-डे मिल के लिए पर्याप्त बर्तन की व्यवस्था के लिए जो राशि उपलब्ध कराई जाती है। उसका दुरुपयोग हो रहा है, विद्यार्थियों की संख्या के अनुसार बर्तन उपलब्धता को सुनिश्चित किया जाय।
3. विद्यार्थियों को साफ-सफाई और अच्छी आदतों के बारे में हमेशा शिक्षकों को जानकारी देते रहना, जिससे उनमें अच्छी आदतों का विकास होगा एवं स्वच्छता के लिए सचेत होंगे।
4. शिक्षकों को भेद-भाव वाले संकीर्ण नजरिए को बदलना होगा जिससे समभाव से सभी विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा दी जा सके।
5. कठिन विषय जैसे- गणित, विज्ञान आदि की पढ़ाई मध्याह्न भोजन से पहले होनी चाहिए इसका मनोबैज्ञानिक लाभ विद्यार्थियों को मिलेगा।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *Bhargava M, Kandpal SD, Aggarwal P, Sati H. A Comparative Study of Mid-Day Meal Beneficiaries and Private School Attendees. Indian Journal of Community Health. 2014; 26(6) : 223-227*
2. *Lath Rahul. Analysis of Mid Day Meal Scheme and School Health Clinics. CCS Working Paper on state of Education Schemes in Mumbai. 2006; 65-70*
3. *Paul PK, Mondal NK. Impact of Mid-Day Meal Programme on Academic Performance of Students: Evidence from Few Upper Primary Schools of Burdwan District in West Bengal. International Journal of Research in Social Sciences. 2012; 2(3) : 391-406*
4. <http://mhrd.gov.in/hi/mid-day-meal-hindi>
5. साक्षरता और मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, ए-रिपोर्ट, चण्डीगढ़ 2010-11।
6. सिकलीगर, पी.सी., "मिड-डे-मील एण्ड स्कूल एजुकेशन प्लानिंग इम्प्लीमेंटेशन एण्ड इफेक्टिवनेस" कनसर्पेट पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011।
7. *Bhargava M, Kandpal SD, Aggarwal P, Sati H. A Comparative Study of Mid-Day Meal Beneficiaries and Private School Attendees. Indian Journal of Community Health. 2019; 26(6) : 223-227*
8. *Lath Rahul (2018) Analysis of Mid Day Meal Scheme and School Health Clinics. CCS Working Paper on state of Education Schemes in Mumbai. 65-70*
9. *Paul PK, Mondal NK. (2018) Impact of Mid-Day Meal Programme on Academic Performance of Students: Evidence from Few Upper Primary Schools of Burdwan District in West Bengal. International Journal of Research in Social Sciences. 391-406*  
<http://mhrd.gov.in/hi/mid-day-meal-hindi>